श्री आत्मसिद्धि शास्त्र • गाथा 108-114

अध्यात्म की अंतर्यात्रा - प्रेम हो जाने के छ: चरण

108 कषाय की उपशांतता, मात्र मोक्ष अभिलाष;
भव खेद अंतर दया, वह कहिए जिज्ञास।

जिज्ञासा यानी वृत्ति की पहचान और उसकी दिशा को पलटना
चरण - वैराग्य और जिज्ञासा का सम्मिश्रण

109 उस जिज्ञासु जीव को, मिले जो सद्गुरु बोध;
तो पाये समकित को, वर्ते अंतर्शोध।

दिशा को पलटने में सहयोगी **सद्गुरु बोध** का मिलना
चरण - जिज्ञासा की गहराई

110 मत दर्शन आग्रह त्यजे, वर्ते सद्गुरु लक्ष्य;
पाये शुद्ध समकित को, जिसमें भेद न पक्ष।

सद्गुरु-लक्ष्य (केंद्र) से अंतिम दीवारों का गिरना
चरण - प्रार्थना में केंद्रित जीवन

111 वर्ते निज स्वभाव का, अनुभव लक्ष्य प्रतीत;
वृत्ति बहे निजभाव में, परमार्थ समकित।

निजभाव यानी अनंत का आँगन में उतरना
चरण - प्रवाह अवस्था में प्रवेश

112 वर्धमान समकित हो, टाले मिथ्याभास;
उदय होय चारित्र का, वीतराग पद वास।

आचरण विशुद्धि (वेदन) से **वीतराग पद** में ठहरना
चरण - लौटना/लौटाना से सम्मत जीवन

113 केवल निज स्वभाव का, अखंड वर्ते ज्ञान;
कहिए केवलज्ञान उसे, देह संग निर्वाण।

प्रियतम से मिलन अर्थात् **देह संग निर्वाण**
चरण - पवित्र मिलन के दिव्य पल

114 कोटि वर्ष का स्वप्न भी, जागृत हो भ्रम जाए;
ऐसे विभाव अनादि का, ज्ञान होय दूर जाय।

पूर्व-संचित कर्म से निवृत्ति और **भ्रम** का विसर्जन
चरण - अहं का पिघलना और प्रेम में मिलना